P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-1* April- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

अथर्ववेद संहिता में जीवन को सुखमय बनाने का रहस्य

सारांश

अथर्व वेद की विषय वस्तु ऐहिक है यह जीवन को सुखमय तथा दुःखरहित बनाने के किये जिन–जिन साधनों की आवश्यकता होती है उनकी सिद्धि के लिये नाना प्रकार के अनुष्ठानों का विधान इस वेद में किया गया है –''**अटेषु गात्रेषु यो रसः सप्त धातुमयः तमधिकृत्य या चिकित्सा साटिरसानां चिकित्सा।**'' अर्थात् शरीर में जो सप्त धातुमय रस है उसकी चिकित्सा जिसमें है, वह अ रिस वेद है। संहिता के प्रारम्भिक 13 काण्डों का विषय जारण, मारण उच्चाटनादि से सम्बन्धित है। चौदहवें काण्ड में विवाह, 18 वें में श्राद्ध तथा बीसवें अध्याय में सोमयाग से सम्बन्धित मंत्र दिये गये है जब कि उन्नीसवें अध्यायक में राष्ट्रवृद्धि एवं अध्यात्मपरक सूक्त है।

मुख्य शब्द : अथर्ववेद संहिता, पिप्पलाद मौद, शौनक, अथर्ववेदीय ब्राह्मण, गोपथ ब्राह्मण अथर्ववेदीय उपनिषद, प्रश्नोपनिषद्, मुण्डक, माण्डूक्य उपनिषद।

सुनीता सिंह
व्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
गोचर कृषि इण्टर कालेज,
रामपुर,शहारनपुर

प्रस्तावना

अंगिरा वंशीय अथर्वा ऋषि द्वारा दृष्ट होने के कारण इस वेद को अथर्ववेद–संहिता के नाम से जाना जाता है। इसे भृग्वंगिरा वेद तथा ब्रह्मवेद के नाम से भी जाना जाता है। इसे श्रत्विक ब्रम्हा कहा जाता है इस वेद के देवता सोम तथा प्रमुख आचार्य सुमन्तु है। अथर्व संहिता में यज्ञोपयुक्त अंश कम होने के कारण इसे वेदत्रयी की अपेक्षा कम महत्व दिया गया है क्योंकि यह अधिकांश अभिचारात्मक ही है। महाभाष्यकार पातंजलि के अनुसार – 1. पिप्लाद, 2. स्तोद, 3. मोद, 4. शौनकीय, 5. जाजल, 6. जलद, 7. ब्रह्मवेद, 8. देवदर्श तथा 9. चारणवैद्य : ये नौ शाखाएँ हैं। इनमें से इस समय पिप्पलाद एवं शौनकीय मात्र दो ही शाखाएं उपलब्ध होती है। सम्पुर्ण अथर्ववेद में कुल 20 काण्ड, 34 प्रपाठक, 111 अनुवाक, 739 सूक्त तथा 5849 मन्त्र है। इनमें से लगभग 1200 मंत्र ऋग्वेद से भी मिलते है। आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार – अथर्ववेद में कुल 20 काण्ड 731 सूक्त तथा 5987 मन्त्र है।

पिप्पलाद

पिप्पलाद मुनि एक बहुत बड़े आध्यात्मवेता प्रतीत होते हैं। अपनी आध्यात्मविषयक शंकाओं का निवारण करने के अभिप्राय से सुकेशा, भारद्वाज आदि छः मुनियों के इनके पास जाने का उल्लेख मिलता है और इन्होंने जो उत्तर दिये वे प्रश्नोपनिषद् में सुरक्षित हैं। इनके दो ग्रंथ थे। प्रपंचहृदय का कथन है कि पिप्पलाद शाखा की मन्त्र–संहिता 20 काण्ड वाली है, तथा उसके ब्राह्मण में आठ अध्याय विद्यमान है। पिप्पलाद संहिता की एक मात्र प्रति शारदा लिपि में कश्मीर में उपलब्ध हुई; जिसे कश्मीर नरेश ने जर्मन विद्वान् डा0 राथ को 1885 में उपहार में भेज दी।

मौद

महाभाष्य (4/1/86) तथा शावरभाष्य (1/1/30) में इनका उल्लेख मिलता है। अथर्वपरिशिष्ट (2/5/2) ने मौद तथा जलद शाखा वाले पुरोहित के रखने से राष्ट्र के नाश की आशंका प्रकट की है, जिससे इन शाखाओं के कम से कम अस्तित्व या प्रचलन का पता चलता हैः–

पुरोधा जलदो यस्य मौदो वा स्यात् कदाचन।
अब्दाद् दशभ्यो मासेभ्यो राष्ट्रभ्रंशं स गच्छति।।

शौनक

आजकल प्रचलित संहिता तथा गोपथ–ब्राह्मण इसी शाखा के है। अथर्ववेद में आजकल जो विभाजन काण्ड, सूक्त तथा मन्त्र रूप में प्रकाशित हुआ है, इसी शौनकीय संहिता को ही 'ऋषि संहिता' कहते है। अथर्ववेद में 20 काण्ड, 731 सूक्त तथा 5987 (पाँच हजार नव सौ सतासी) मन्त्रों का संग्रह है। आरम्भ के सात काण्डों में छोटे–छोटे सूक्त सम्मिलित हैं। प्रथम काण्ड के प्रत्येक सूक्त में नियम से 4 मन्त्र, द्वितीय काण्ड में 5 मन्त्र, तृतीय काण्ड में 6 मन्त्र, चतुर्थ

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-1* April- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

काण्ड में 7 मन्त्र, तथा पंचम काण्ड में 8 मन्त्र है। षष्ठ काण्ड में 142 सूक्त हैं तथा प्रतिसूक्त में कम से कम तीन मन्त्र हैं। सप्तम काण्ड में 118 सूक्त हैं जिनमें अधिकतर सूक्त एक या दो ही मंत्र के हैं। आठ से लेकर बारह कांडों में बड़े–बड़े सूक्त हैं, परन्तु विषयों की एकता न होकर विभिन्नता ही दृष्टिगोचर होती है। 13 से लेर 18 काण्ड तक विषयों की एकता विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है। 12वें काण्ड के आरम्भ में पृथ्वी सूक्त (63 मन्त्र) है। जिसमें अनेक राजनीतिक तथा भौगोलिक सिद्धान्तों की भव्य भावना आलोचक की दृष्टि को आकृष्ट करती है। 13वाँ काण्ड अध्यात्म विषयक है। चौदहवें कांड में केवल दो लम्बे सूक्त हैं (133 मन्त्र) जिनमें विवाह का ही प्रधानतया वर्णन है। 15वाँ कांड व्रात्य कांड है। जिनमें व्रात्यों के यज्ञ–संपादन का आध्यात्मिक वर्णन है। 16वाँ काण्ड दुःस्वप्ननाशक मन्त्रों (103) का एक सुन्दर संग्रह है। 17वें काण्ड में केवल एक ही सूक्त 30 मन्त्रों का है, जिसमें अभ्युदय के लिए भव्य प्रार्थना की गयी है। 18वाँ काण्ड श्राद्ध–काण्ड है, जिसमें पितृमेघ सम्बन्धी मंत्र संकलित हैं अन्तिम दोनों कांड 'खिल काण्ड' के नाम से प्रसिद्ध हैं जो मूल ग्रंथ की रचना के पीछे जोड़े गये माने जाते है। 19वें कांड में 72 सूक्त तथा 453 मन्त्र है जिनमें भैषय, राष्ट्रवृद्धि तथा अध्यात्म – विषयक मन्त्र संकलित हैं। अन्तिम काण्ड में मन्त्रों की संख्या लगभग एक हजार (158) की है, जो विशेषरूप से सोमयाग के लिए आवश्यक होते हैं तथा ये मन्त्र ऋग्वेद ऋचाओं से साम्य रखते हैं।

तौद, जाजल, ब्रह्मवेद तथा देवदर्श नाममात्र प्रसिद्ध हैं। अथर्व की अन्तिम शाखा चारण–वैद्यों के विषय में कौशिक सूत्र की व्याख्या (6/37) तथा अथर्व–परिशिष्ट (22/2) से कुछ पता चलता है।

अथर्ववेदीय–ब्राह्मण

गोपथ ब्राह्मण

अथर्ववेद का केवल एक ही ब्राह्मण है जिसका नाम गोपथब्राह्मण है। इसके दो भाग हैं 1. पूर्व–गोपथ 2. उत्तर गोपथ। प्रथम गोपथ में 5 तथा द्वितीय गोपथ में 6 प्रपाठक या अध्याय हैं। प्रपाठकों का विभाजन कण्डिकाओं में हुआ है, जो कुल मिलाकर 258 है। ब्राह्मण–साहित्य में यह ग्रन्थ बहुत ही पीछे की रचना माना जाता है।इस ब्राह्मण में अथर्ववेद की स्वभावतः विशेष महिमा गाई गई है। अथर्व ही सब ब्राह्मणों में अग्रगण्य तथा प्रथम माना गया है। अथर्व से ही तीनों वेदों तथा ओंकार की उत्पत्ति और ओम् से समस्त संसार की उत्पत्ति बतलाई गयी है। पूर्व गोपथ के प्रथम प्रपाठक में ओंकार तथा गायत्री की विशेष महिमा का सुन्दर वर्णन है। द्वितीय प्रपाठक में ब्रह्मचारी के नियमों का विशेष वण्रन है। प्रत्येक वेद के अध्ययन के लिए बारह वर्ष का समय नियत किया गया है, परन्तु छात्र की शक्ति को देखकर इस अवधि में कमी भी की जा सकती है। तृतीय प्रपाठक में यज्ञ के चारों ऋत्विजों के कार्यकलाप का वर्णन है। चतुर्थ प्रपाठक में यज्ञ के चारों ऋत्विजों चतुर्थ प्रपाठक में यज्ञ के चारों ऋत्विजों केकार्यकलाप का वर्णन है। चतुर्थ प्रपाठक में ऋत्विजों की दीक्षा का विशेष वर्णन किया गया है।पंचम प्रपाठक में प्रथमतः सम्वत्सरसत्र का वर्णन है। अनन्तर अश्वमेघ, पुरूषमेघ, अग्निष्टोम आदि अन्य सुप्रसिद्ध यज्ञों का भी विवरण हैं। उत्तर गोपथ का विषय–वर्णन इतना सुव्यवस्थित नहीं है, तथापि नाना प्रकार के यज्ञों तथा तत्सम्बद्ध आख्यायिकाओं के उल्लेख से यह भाग भी पूर्व की अपेक्षा कम रोचक नहीं है।

''गोपथ ब्राह्मण[1]'' के रचयिता निश्चय ही 'गोपथ' ऋषि हैं। अथर्ववेदीय ऋषियों की नामावली में 'गोपथ' का नाम आता है, परन्तु अन्य वेदों के ऋषियों की नामावली हमें इनका नाम नहीं मिलता। इसमें निद्धिष्ट देशों में कुरू–पंचाल, अंग–मगध; काशी–कोशल, साल्व–मत्स्य तथा वश–उसीनर (उदीच्यदेश) का नाम पाया जाता है (गोपथ, पूर्व 2/10), जिससे रचयिता मध्यदेश के निवासी प्रतीत होता है। अथर्ववेद के प्रथम मन्त्र का उल्लेख वह 'शन्नोदेवीरभिष्टय' से करता है। जिससे उसका पिप्पलाद–शाखीय होना अनुमान से सिद्ध होता है। यास्क ने निरूक्त में गोपथ ब्राह्मण के निश्चित अंशों को उद्धत किया है[2], जिससे इसकी निरूक्त से पूर्व कालीनता स्वतः सिद्ध होती है। फलतः ब्राह्मण साहित्य में पिछली रचना होने पर भी यह एक सहस्र वर्ष वि0पू0 से अर्वाचीन नहीं हो सकता।

साहित्यावलोकन

अथर्ववेद में आयुर्वेद सम्बन्धी साम्रगी एवं इसका प्रतिपाद्य विषय विभिन्न प्रकार की औषधियाँ, ज्वर, पीलिया, सर्पदंश, विष–प्रभाव को दूर करने के मंत्र, सूर्य की स्वास्थ्य–शक्ति, रोगोत्पादक कीटाणुओं के शमन आदि का वर्णन है। इस वेद में यज्ञ करने के लाभ एवं यज्ञ से पर्यावरण की रक्षा का भी वर्णन है।इसमें आर्य एवं अनार्य धार्मिक विचारों का समिश्रण मिलते हैं। वस्तुतः इसके राजनीति तथा समाज शास्त्र के अनेक ऊँचे सिद्धान्त है इसमें 20 काण्ड 34 प्रपाठक, 111 अनुवाक, 731 सूक्त तथा 5839 मंत्र है। इनमें 1200 के लगभगमंत्र ऋग्वेद से लिये गये है। अथर्व वेद की दो शाखायें उपलब्ध है। पिप्पलाद तथा शौनक, वर्तमान समय में शौनक शाखा ही पूर्ण रूप से प्राप्त होती है। यह शाखाआदित्य सम्प्रदाय की है। इसमें जीव और ब्रम्ह की एकता के प्रतिपादन द्वारा ऊँची से ऊँची दार्शनिक उडाने ली गयी है। वैदिक साहित्य में इनका स्थान सब से अन्त में होने से ये 'वेदान्त' भी कहलाते है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध पत्र के माध्यम से अथर्ववेद में व्याप्त ऋचाओं का प्रमुखता से विश्लेषण किया गया है, जिसमें संहिता के काण्डों का अध्ययन एवं शाखाओं की विवेचना की गयी है। जिसका उद्देश्य अथर्ववेद संहिता के विषय में सम्पूर्ण अवलोकन कराना है।

अथर्ववेदीय उपनिषद

प्रश्नोपनिषद

इस उपनिषद् में छः ऋषि ब्रह्मविद्या की खोज में महर्षि पिप्पलाद के समीप जाते हैं और उनसे आध्यात्म विषयक प्रश्नों का उत्तर पूछते हैं। प्रश्नों के उत्तर में निबद्ध होने से इसका 'प्रश्न' उपनिषद् नाम सर्वथा सार्थक हैं। प्रश्नों का विषय अध्यात्मजगत् की मान्य समस्यायें हैं, जिनके समीक्षण के कारण पिप्पलाद एक उदात्त तत्वज्ञानी के रूप में हमारे सामने आते हैं। मीमांस्य प्रश्न है– 1. प्रज्ञा की उत्पत्ति कहाँ सेहोती है। 2. कितने देवता प्रजाओं

को धारण करते हैं तथा कौन इनको प्रकाशित करताहैं तथा कौन सर्वश्रेष्ठ है। 3. प्राणों की उत्पत्ति, शरीर में आगमन तथा उक्रमणआदि विषयक प्रश्न, 4. स्वप्न जागरण तथा स्वप्न दर्शन आदि विषयक प्रश्न 5. ओंकार पुरूष की उपासना तथा उसमें लोकों का विजय, 6. षोऽशकला सम्पन्न पुरूष की विवेचना इन प्रश्नों के उत्तर में आध्यात्म की समस्त समस्याओं का विवेचना बड़ी सुन्दरता तथा गम्भीरता के साथ किया गया है। अक्षर ब्रह्म ही इस जगत् की प्रतिष्ठा बतलाया गया है।

मुण्डक–उपनिषद्

(तीन मुण्डक तथा प्रत्येक के दो खण्ड) यह अथर्ववेदीय उपनिषय् 'मुण्डक' (मुण्डन–सम्पन्न व्यक्तियों) के निमित्त निर्मित हैं। इस उपनिषद में ब्रह्मा अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा को ब्रह्मविद्या का उपदेश देते हैं। यज्ञीय अनुष्ठान अदृढ़रूप प्लव है, जिसके द्वारा संसार का संतरण कभी नही हो सकता है। इष्टापूर्व– यज्ञादि अनुष्ठान को ही श्रेष्ठ मानने वाले व्यक्ति स्वर्गलोक पाकर भी अन्ततः इस भूतल पर आते हैं (1/2/10)। इस प्रकार कर्मकाण्ड की हीनता तथा दोषों के अनन्तर ब्रह्मज्ञान की श्रेष्ठता प्रतिपादित है। द्वैतवाद का प्रधान स्तम्भरूप 'द्वासुपर्णा सयुजा सखाया' (3/1/1) मन्त्र इस उपनिषद् में आता है। वेदान्त शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग यही उपलब्ध होता है (3/2/61)। ब्रह्मज्ञानी के ब्रह्म में लय प्राप्त करने की तुलना नामरूप को छोड़कर नदियों के समुद्र में अस्त होने से दी गई है। इसमें सांख्य तथा वेदान्त के तथ्यों भी यत्किंचिन दृष्टिगोचर होतो है।

माण्डूक्य–उपनिषद्

आकार में जितना स्वल्पकाय है सिद्धान्त में उतना ही विशाल है। इसमें केवल 12 खण्ड या वाक्य हैं, जिनमें चतुष्पाद आत्मा का बड़ा ही मार्मिक तथा रहस्यमय विवेचन है। इस उपनिषद् को ऊँकार का मार्मिक व्याख्या करने का श्रेय प्राप्त है। ऊँकार में तीन मात्रायें होती हैं। तथा चतुर्थ अंश 'अमात्र' होता है। चैतन्य की तदनुरूप चार अवस्थायें होती हैं। जागरित, स्वप्न, सुषुप्ति तथा चैतन्य की अव्यवहार्य तुरीय दशा। इन्हीं का आधिपत्य धारण करने वाला आत्मा भी क्रमशः चार प्रकार का होता है– वैश्वानर, तैजस, प्राज्ञ तथा प्रपंचोपशमरूपी शिव, जिनमें अन्तिम ही चैतन्य आत्मा का विशुद्ध रूप है। इसके ऊपर गौजपदाचार्य ने चार खण्डों में विभक्त अपनी कारिकायें (माण्डूक्य कारिका) लिखी है, जो मायावादी अद्वैत–वेदान्त की पूर्ण प्रतिष्ठा मानी जाती है।

ऋग्वेद की सर्वोच्चता

चारो वेदों में ऋग्वेद का गौरव सबसे अधिक माना जाता है। पाश्चात्य दृष्टि में ऋग्वेद भाषा तथा भाव के विचार से अन्य वेदों से नितान्त प्राचीन है। ऋग्वेद के बहुत सारे मंत्र अन्य तीनों वेदों में मिलते हैं।

भारतीय दृष्टि से भी ऋग्वेद का अभ्यर्हितत्व–पूजनीयता–सर्वत्र स्वीकार किया जाता है तैत्तिरीय संहिता के अनुसार साम तथा यजुः के द्वारा जो विधान किया जाता है वह शिथिल होता है, परन्तु ऋक के द्वारा विहित अनुष्ठान ही दृढ़ होता है।[1] पुरूष सुक्त में सहस्रुशीर्षा यशरूपी परमेश्वर से ऋचाओं का ही आविर्भाव सबसे पहले बताया गया है।[2] इसके अतिरिक्त ऋग्वेद में देवताओं की स्तुतियों के अलावा बहुत सारी राजनीतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, एवं सांस्कृतिक जानकारीयाँ प्राप्त होती हैं।

ऋग्वेद में अनेक दार्शनिक सुक्तों की उपलब्धि होती है, जो अपनी विचारधारा से आर्यों के तात्विक चिन्तनों के विकास सूचक हैं। ऐसे सूक्तों में नासदीय सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त, पुरूषसूक्त एवं वाक्सूक्त प्रमुख हैं। ऋग्वेद के ये दार्शनिक सूक्त उसे उपनिषदों के तात्विक विवेचनों के साथ सम्बद्ध होते हैं। ऋग्वेद के कतिपय सुक्त उसे प्रबन्धकाव्य, तथा नाटकों के साथ भी सम्बन्ध जोड़ने वाले हैं। इन्हें संवाद सूक्त कहा गया है। ऋग्वेद के दशवें मण्डल में अनेक सूक्तों द्वारा लौकिक तथा व्यवहार से सम्बन्ध रखने वाले विषयों का रोचक वर्णन उपलब्ध होता है। ऋग्वेद के दो सूक्त (10/173, 174) राजनीति की दृष्टि से अत्यन्त महत्व के हैं जिनमें राजा की प्रशस्त स्तुति की गयी है। वही यजुर्वेद में मुख्य रूप से यज्ञीय विधि विधान का वर्णन है। यह मुख्य रूप से कर्मकाण्ड का प्रतिपादन करता है। सामवेद में मुख्य रूप से यज्ञ के अवसर पर गाये जाने वाले स्तुतिपरक मंत्रों का संग्रह है। अथर्ववेद में ऐहिक, आमुष्मिक, लौकिक, तथा पारलौकिक, विषयों का प्रतिपादन किया गया है। इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि चारों वेदों में ऋग्वेद का स्थान सर्वोपरि है।

निष्कर्ष

वैदिकवाड़.मय के अथर्ववेदीय संहिता में जीवन को सुखमय तथा दुःखरहित बनाने के लिये मंत्र, रोगनिदान (चिकित्सा) जड़ीबुटियों इत्यादि का विस्तृत अध्ययन है जिनमें इसे 7 वर्गो में विभक्त किया गया है। इसमें दीर्घायु प्राप्त करने की प्रार्थनाओं का संकलन है, कृषि कर्म, गृह निर्माण, व्यापार से सम्बन्धित वर्णन है। इसमें विवाह, प्रेम सन्तानोत्पत्ति भव्य प्रार्थनाओं वाले सूक्त संकलित है जिसमेंजादू–टोना का वर्णन भी मिलता है। चरित्रगत त्रुटि, धर्म विरोध, अज्ञात अपराधों के किये प्रायश्चित करने का मन्त्र भी इसमें मिलता है।

इसकी विवेचना –भैषज्यसूक्त, पौष्टिकसूक्त आयुष्यसूक्त, स्त्रीकर्मसूक्त, प्रायाश्चित सूक्त, ब्राह्मण्यसूक्त, राजकर्म सूक्त में पायी जाती है।

इस शोध लेख के निष्कर्ष के माध्यम से यह कहा जा सकता है कि इसमें अथर्ववेद संहिता का अध्ययन उसके गुणों के आधार पर किया गया है जिसका सामाजिक रूप से प्रमाणिक महत्व है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गोपथ ब्राह्मण का एक सुन्दर संस्करण – डा0 गास्ट्रा द्वारा लाइडन नथर –1919 में,*
2. *सांङोपांग अध्ययन मारिस ब्लूमफील्ड –डा0 सूर्यकान्त –चौखम्भा*
3. *एतद्वै यज्ञस्य समृद्ध यद्रूपसमृद्धमं' (निरुक्त 1/16– गोपथब्राह्मण 2/2/6, 2/4/2)।*
4. *वैदिकसाहित्य–वाईवेसपैनोरामा–अक्टूबर*
5. *वेदांगसाहित्य –जून*
6. *–वैदिकसंहिता एवंब्राह्मण–*